Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -II.   PAPER-III

मन के पहलू:गत्यात्मक पहलू ASPECTS OF MIND: DYNAMIC ASPECTS OF MIND

मनोविज्ञान में **'मन'** का तात्पर्य आत्मन(psyche), स्व (self) या व्यक्तित्व(personality) से है, जो कि एक अमूर्त संप्रत्यय(abstract concept) है। जिसे केवल महसूस किया जा सकता है। इसे ना तो देखा जा सकता है और ना ही स्पर्श किया जा सकता है। इसका प्रमाण केवल अप्रत्यक्ष रूप से(indirectly) दिया जा सकता है।
फ्रायड(Freud) ने मन, आत्मन या व्यक्तित्व की दो अवस्थाओं या पहलुओं का उल्लेख किया है, जिन्हें **'मन का गत्यात्मक पहलू (dynamic aspect of mind)'** तथा **'मन का आकारात्मक पहलू (topographical aspect of mind)'** कहते हैं।
मन का गत्यात्मक पहलू (dynamic aspect of mind) - मनके गत्यात्मक पहलू का तात्पर्य उस आंतरिक गतिकी से है, जिसके द्वारा मूल प्रवृत्तियों की उत्पत्ति एवं उनका समाधान किया जाता है। फ्रायड ने मन के गत्यात्मक पक्ष को दो अर्थों में व्यवहृत किया है- पहले अर्थ में, गत्यात्मक मन मानसिक संघर्षों को उत्पन्न करने वाला अभिकर्ता है और दूसरे अर्थ में, यह मानसिक संघर्षों का समाधान करने वाला अभिकर्ता है। फ्रायड ने गत्यात्मक मन के तीन प्रकार बतलाए हैं, जिन्हें गत्यात्मक मन के तीन अभिकर्ता (agents) कहा जाता है। ये निम्नलिखित है-
१)इड /उपाहं ,(Id)
२)ईगो / अहं तथा (Ego)
३)सुपर ईगो / पराहं (Super Ego)
गत्यात्मक मन के **इड** तथा **सुपर ईगो** के विरोधी स्वरूप के कारण मानसिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं और **ईगो** के यथार्थवादी स्वरूप होने के कारण वह इन संघर्षों का समाधान करता है। इन तीनों के स्वरूप तथा कार्य की व्याख्या निम्नलिखित है-
१)इड /उपाहं ,(Id) - **'इड'** मन,आत्मन या व्यक्तित्व के गत्यात्मक पक्ष का पहला संघटक है, जो जन्मजात होता है। गत्यात्मक मन के फ्रायडवादी त्रिपक्षीय मॉडल में **'इड'** वह भाग है जो आदिम, पाशविक, वृत्तिक, गंदला, कामुक तथा तत्कालिक संतुष्टि की मांग करने वाला होता है। जन्मकाल से ही यह बच्चे में विद्यमान होता है।यह हमेशा 'सुख के नियम या सिद्धांत' पर कार्यरत होता है। यह केवल वैसे कार्यों को करने के लिए व्यक्ति को बाध्य करता है जिससे सुख या आनंद मिलने की आशा होती है, चाहे कार्य नैतिक हो या अनैतिक, सामाजिक हो या असामाजिक, समय तथा स्थान के अनुकूल हो या प्रतिकूल, वास्तविक हो या अवास्तविक, संभव हो या असंभव। **इड** पूर्णत: अचेतन होता है एवं इसमें वास्तविकता का अभाव पाया जाता है। अचेतन होने के कारण इसे जीवन की वास्तविकता की जानकारी नहीं होती है। यही कारण है कि यह व्यक्ति को ऐसे कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है जो वास्तविकता के अनुकूल नहीं होते हैं। इसका संबंध वर्तमान समय से होता है; अतीत या भविष्य से नहीं। यह केवल वर्तमान को ध्यान में रखकर व्यक्ति को किसी कार्य को करने के लिए बाध्य करता है।**इड** में न तो अतीत की घटनाओं की चेतना रहती है और ना ही भविष्य की संभावित घटनाओं की प्रत्याशा होती है। वह जैविक रूप से अनुकूलित होता है और अपनी इच्छाओं की संतुष्टि तात्कालिक चाहता है। बच्चों में पाए जाने वाले ज़िद के लक्षण, झूठ बोलना, चोरी करना, इत्यादि **इड** के प्रभावशीलता के कारण होते हैं। फ्रायड द्वारा प्रतिपादित दो तरह की मूल प्रवृत्तियां, पहला; **जीवन मूल प्रवृत्ति** जो रचनात्मक मूल प्रवृत्ति है तथा दूसरा; **मृत्यु मूल प्रवृत्ति** जो ध्वंसात्मक मूल प्रवृत्ति है। यह दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां **इड** में विद्यमान रहती हैं। जिससे **इड** कभी रचनात्मक कार्यों के माध्यम से

और कभी ध्वंसात्मक कार्यों के माध्यम से सुख या आनंद प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बाध्य करता है।

२)ईगो / अहं तथा (Ego) - **ईगो** मनके गत्यात्मक पक्ष का दूसरा भाग है। यह बच्चे में जन्म के कुछ समय (वर्ष) बाद विकसित होता है।**इगो** व्यक्तित्व का वह भाग है जो चेतन होता है तथा वास्तविकता के संपर्क में सबसे अधिक होता है। वातावरण (शारीरिक तथा सामाजिक पर्यावरण) से उत्पन्न निराशा, कुंठा के कारण **इड** से ही एक दूसरा गत्यात्मक भाग विकसित हो जाता है जिसे **'इगो'** कहा जाता है। बच्चे में परिपक्वता के साथ-साथ वह समझने लगता है कि जीवन में दुख भी हैं और बाधाएं भी।इसी चेतना के साथ **इगो** का आरंभ होता है। जैसे-जैसे उसे अपनी इच्छाओं की संतुष्टि में बाधाएं उत्पन्न होती है और निराशा का अनुभव होता है, ईगो विकसित होता जाता है। **ईगो** को भौतिक वास्तविकता का ज्ञान होता है। उसे इस बात का बोध रहता है कि किस कार्य को, किस समय तथा किस स्थान या परिस्थिति में करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए।इगो 'वास्तविकता के सिद्धांत' पर कार्य करता है। यह केवल ऐसी चीजों पर विचार करता है जो व्यावहारिक तथा संभव होती हैं। किसी भी क्रिया या इच्छा को प्रोत्साहित करते समय वह भौतिक वास्तविकताओं को ध्यान में रखता है। समय, स्थान तथा परिस्थिति की अनुकूलता होने पर अनैतिक इच्छाओं की संतुष्टि में भी वह मदद करता है और प्रतिकूलता होने पर ऐसी इच्छाओं की संतुष्टि पर रोक या प्रतिबंध लगाता है।**इगो** वास्तव में स्मरण, चिंतन, वास्तविकता परीक्षण, अनुमान निर्माण, आत्म मूल्यांकन आदि संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का भंडार होता है।इन्हें संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के आलोक में इगो व्यक्ति की इच्छा की संतुष्टि होने देता है अथवा उस पर प्रतिबंध लगा देता है। इसका स्वरूप राजनेताओं की तरह अवसरवादी होता है। जिस प्रकार राजनेता परिस्थिति के अनुकूल भाषण देकर या व्यवहार करके अपना उल्लू सीधा करते हैं ठीक उसी तरह इगो परिस्थिति के अनुकूल अपना रंग बदल कर नैतिक तथा अनैतिक इच्छाओं की संतुष्टि में सहायक होता है। यह समय के अनुकूल होने पर **इड** की अनैतिक इच्छाओं की पूर्ति भी करता है और **सुपर ईगो** की नैतिकता में सहायक भी होता है। यह **इड** तथा **सुपर ईगो** के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। **इगो** व्यक्तित्व का एक विवेकी भाग है जो **इड** की मांगों , **सुपर ईगो** के दबाव तथा बाह्य संसार की वास्तविकताओं के बीच मध्यस्थता करता है। **इगो** का एक प्रधान कार्य व्यक्ति के अस्तित्व की रक्षा करना होता है जब **इगो** चेतन रूप से **इड** तथा **सुपर ईगो** को नियंत्रित करके व्यक्ति के मानसिक संतुलन को बनाए रखने में विफल हो जाता है और उसका अस्तित्व खतरे में पड़ने लगता है तो वह भिन्न-भिन्न मनोरचनाओं जैसे-प्रतिगमन, प्रतिक्रिया निर्माण, प्रक्षेपण इत्यादि के माध्यम से संघर्षों का समाधान करके व्यक्ति के अस्तित्व को बचा लेता है।

३)सुपर ईगो / पराहं (Super Ego) - **सुपर ईगो** मन के गत्यात्मक पहलू का तीसरा तथा अंतिम भाग हैं जो बच्चे के परिपक्वता के साथ-साथ सामाजिक नियमों, नीतियों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, संस्कृतियों, इत्यादि को सीखने-समझने के साथ विकसित होता है।**सुपर ईगो** व्यक्ति के अंत:करण का एक प्रकार है, जो नैतिक मानक के अनुकूल उसे व्यवहार करने पर बल देता है। **सुपर ईगो** पूर्णत: चेतन, नैतिक तथा आदर्शों का भंडार होता है।**सुपर ईगो** के कारण ही व्यक्ति में दोष भाव तथा पछतावा का भाव उत्पन्न होता है यह व्यक्ति को नैतिक कार्यों के लिए उत्प्रेरित करता है तथा अनैतिक कार्यों से रोकता है।

मन के इस गत्यात्मक पहलू **'इड ईगो तथा सुपर ईगो'** को एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। जैसे - एक व्यक्ति एक ऐसे बगीचे से गुजर रहा है, जिसमें ढेर सारे सुंदर गुलाब लगे हुए हैं। **इड** उसे उस गुलाब को तोड़ने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे में **सुपर ईगो** नैतिकता की दुहाई देकर उसे ऐसा कृत्य करने से रोकता है। **ईगो** माली के उपस्थित होने पर,परिस्थिति को देखते हुए बाद में गुलाब को तोड़ने की सोचता है। उपरोक्त उदाहरण में **ईगो;' इड** और **सुपर ईगो'** के बीच परिस्थिति के अनुसार संतुलन स्थापित करता है।

मन के गत्यात्मक पहलू को उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि ***फ्रायड*** ने मन के गत्यात्मक पहलू के अंतर्गत इसके तीन भागों का वर्णन किया है, जो **'इड, ईगो तथा सुपर ईगो'** है।**इड** वास्तव में सुख के नियम पर कार्यरत होता है, **ईगो** वास्तविकता के नियम पर और **सुपर ईगो** नैतिकता के नियम पर कार्यरत होता है।इन तीनों की संबंधों की चर्चा करें तो हम पाते हैं कि **इड** मूलतः जैविक रूप से अनुकूलित होता है, **ईगो** मूलतः भौतिक वातावरण द्वारा अनुकूलित होता है तथा **सुपर ईगो** मुख्यत: सामाजिक या सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित होता है।

26/05/2020. **-. Sanjay Kumar**